ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(11): 108-110
www.allresearchjournal.com
Received: 18-09-2017
Accepted: 19-10-2017

डॉ.उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, गुजरात, भारत

Correspondence
डॉ.उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, गुजरात, भारत

'पद्मावती समय' में इतिहास और कल्पना

डॉ.उत्तम पटेल

सारांश
चंद बरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। जिसमें कवि चंद ने दिल्ली नरेश सम्राट पृथ्वीराज चौहाण के चरित् को निरूपित किया है। किन्तु अपनी ऐतिहासिकता को लेकर यह ग्रंथ बहुत ही विवादास्पद रहा है। विद्वानों ने इसे प्रामाणिक, अप्रामाणिक एवम् अर्ध प्रामाणिकता की कोटि में रख दिया है। क्योंकि कि रासो में वर्णित घटनाएँ इतिहास से मेल नहीं खातीं। वास्तव में तो 'पृथ्वीराज रासो' एक महाकाव्य है। जिसमें कवि को कल्पना की उँची उड़ाने भरने का पूरा अधिकार होता है। कवि चंद ने भी इसमें काल्पनिक घटनाओं का प्रचूरमात्रा में वर्णन किया है। अतः इस काव्य की सभी घटनाएँ इतिहास प्रमाणित नहीं हो सकती। अतः इसमें इतिहास खोजना ही व्यर्थ है। कहने का मतलब यह है कि 'पृथ्वीराज रासो' के 'पद्मावती समय' में कवि चंद ने इतिहास और कल्पना का बहुत ही सुंदर समन्वय किया है।

कुट शब्द: पृथ्वीराज रासो, महाकाव्य, इतिहास, कल्पना, प्रेमाख्यान

प्रस्तावना
कवि चंदबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' एक ऐतिहासिक वीरगाथात्मक काव्य माना जाता है। इसका नायक पृथ्वीराज चौहान निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं। उसने अपने राज काज में देशी-विदेशी आक्रमणकारियों से अनेक लड़ाइयाँ लड़ी थीं। इतिहासकारों के अनुसार पृथ्वीराज ने मुहम्मद शहाबुद्दीन गोरी के साथ 17 बार युद्ध कर उसे पराजित किया था और अंतिम बार वह स्वयं उससे पराजित होकर मारा या पकड़ा गया था। शहाबुद्दीन गोरी ने भारत पर लूटपाट एवम् राज्य-विस्तार के लिए राजधानी या राज्य पर आक्रमण किया था। ऐसी भी मान्यता है कि पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन गोरी के एक भतीजे को आश्रय दिया था, जो गोरी की एक सुंदर नर्तकी और प्रेमिका को भगाकर भारत आ गया था। परिणाम गोरी ने पृथ्वीराज से युद्ध किए। इसमें कल्पना भी हो सकती है। फिर भी इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पृथ्वीराज चौहान एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं और कवि चंद ने इसी ऐतिहासिक वीर-विभूति को ही अपनी रचना

'पृथ्वीराज रासो' का कथा नायक बनाया है। किन्तु रासो में वर्णित घटनाएँ एवम् कथावस्तु की अन्य बातें इतिहास सम्मत नहीं हैं। वैसे एक कवि से यह आशा ही न की जा सकती है कि वह काव्य के नाम पर सारा का सारा इतिहास ही प्रस्तुत कर दें। क्योंकि काव्य या साहित्य इतिहास नहीं होता। कई बार तो इतिहास के बिखरे हुए सूत्रों को जोड़ने के लिए कवि को कल्पना का प्रयोग करना पड़ता है. अपने युग की परंपराओं के निभाव के लिए भी कल्पना का आश्रय कवि लेता है। कई बार अपने नायक के व्यक्तित्व को आदर्श, महान, आकर्षक बनाने के लिए भी कवि मुक्त कल्पना का आश्रय लेता है, परिणाम अतिशयोक्ति आ जाती है।

'पृथ्वीराज रासो' में मूल ऐतिहासिकता के साथ अतिशयोक्ति एवम् कल्पना का समन्वय हुआ है। कवि चंद ने अपने कथा-नायक पृथ्वीराज के चरित्र को वीरता एवम् शृंगार के क्षेत्र में अतिशय महत्वपूर्ण बनाने के लिए अनेक कल्पनाओं का सहारा तो लिया ही है, उसमे परंपरागत लोक-कथाओं एवम् काव्य रूढ़ियों का ऐसा समन्वय कर दिया है कि काव्य की सारी ऐतिहासिकता विवाद का विषय बनकर रह गई है। संयोगिता-स्वंयवर की घटना इसका सुंदर उदाहरण है, क्योंकि यह घटना लोक प्रचलित है।

'पृथ्वीराज रासो' पर आज तक जो अध्ययन हुआ उनमें रासो में वर्णित अनेक घटनाएँ अनैतिहासिक एवम् अनेक ऐतिहासिक प्रमाणित की जा चुकी हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रासो के जिन प्रसंगों का आरंभ शुक-शुकी संवाद से हुआ है, जैसे-

सुकी कहै सुक संभरौ, कही कथा प्रति प्रान।।
पृथु भीरा भीमंग पहु, किम हुआ बैर बिनना।। [1]

× × ×

सुकी सरस सुक उच्चरिय। प्रेम सहित आनंद।।
चालुक्कां सोझति सध्यौ। सारूंडै में चंद।। [2]

× × ×

कहै सुकी सुक संभलौ।नींद न आवै मोहि।।
रयनि रवांनिय चंद करि। कथ इक पूछौं तोहि।। [3]

-को प्रामाणिक माना है। उन्होंने इस दृष्टि से आदि-पर्व, इच्छिनी विवाह, शशिव्रता का गंधर्व विवाह, कैमास-करनाटी प्रसंग, तोमर पाहार का गोरी को पकड़ना, कनवज्ज समय, जिसमें संयोगिता के जन्म, विवाह, इच्छिनी के साथ प्रतिद्वंद्विता एवम् समझौता, बड़ी लड़ाई समय एवम् बान-बोध को प्रामाणिक माना है। [4] इसमें 'पद्मावती समय' का नाम कहीं भी नहीं आता, अतः कहा जा सकता है कि 'पद्मावती समय' पूर्णतः अनैतिहासिक घटना है, किन्तु कवि ने काव्य-रूढ़ि के रूप में, युग परंपरा के रूप को लेकर कल्पना का आश्रय लेकर इसे काव्य में ऐसे जोड़ दिया है कि जिससे यह ऐतिहासिक प्रतीत होता है। संयोगिता स्वयंवर की घटना के आधार पर कवि ने 'पद्मावती समय' की कल्पना की है, परिणाम स्वरूप इसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

'पद्मावती समय' की नायिका राजकुमारी पद्मावती कल्पित एवम् लोक-कथाओं पर आधारित नाम है। जिसे कवि चंद के पहले और बाद में भी अपनाया गया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार- "श्रीहर्ष की 'रत्नावली' में इसी रूढ़ि का ही आश्रय लिया गया है, कौतूहल की 'लीलावती' में भी नायिका सिंहलदेश की ही राजकन्या ही है, और जायसी के 'पद्मावत' में भी वह सिंहलदेश की ही कन्या है. न सभी स्थानों पर सिंहल को समुद्र मध्य स्थित कोई द्वीप माना गया है। अपभ्रंश की कथाओं में भी इस सिंहलदेश की कन्याएँ पद्मिनी जाति की सुलक्षणा होती हैं। जायसी के 'पद्मावत' तक के काल में सिंहल के समुद्र स्थित होने की चर्चा आती है।" जायसी का 'पद्मावत' इसका सुंदर उदाहरण है। इस दृष्टि से भी 'पद्मावती समय' ऐतिहासिक न होकर काव्य-रूढ़ियों का पालन मात्र है। इसकी कथा में दिल्ली को छोड़कर अन्य नाम जैसे-समुद्र शिखर, कुमायूँ कल्पित हैं। कथा में पद्मावती के पिता विजयपाल और मंगेतर कुमोदमणि के नाम इतिहास में उपल्ब्ध नहीं हैं। 'पद्मावती समय' की कथा में वर्णित नामों में से पृथ्वीराज, चंदबरदाई, चामुण्डराय और शहाबुद्दीन गोरी ही ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, किन्तु इन्हें इस कल्पित कथा में बड़ी कुशलता से

सजाया गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन ऐतिहासिक पात्रों के नाम मात्र का उपयोग कवि ने किया है, उनसे जुड़ी हुई कथा-घटना पूर्ण रूप से काल्पनिक है।

तोता भी लोक-कथाओं का पात्र है। 'पद्मावत' में भी यह है। तोते द्वारा पद्मावती का संदेश ले जाना, पृथ्वीराज का पद्मावती को पाने का प्रयत्न करना, पद्मावती और पृथ्वीराज का मिलन, पृथ्वीराज द्वारा पद्मावती का अपहरण-ये सारी घटनाएँ परंपरागत रूढ़ियों के अनुसार वर्णित हैं।

इनके अतिरिक्त पृथ्वीराज द्वारा अपने मंत्रि चामुण्डराय को राज्य सौंप कर कवि चंद को साथ लेकर पूर्व दिशा में स्थित यादववंशी राजा विजयपाल की नगरी समुद्रशिखर की ओर प्रस्थान करना, मुहम्मद गोरी का आक्रमण, पृथ्वीराज का उसके साथ युद्ध करके उसे बंदी बनाना, बाद में दण्ड स्वरूप आठ हजार घोड़े लेकर मुक्त कर देना और अंत में पृथ्वीराज का अष्टभुजा देवी के मंदिर में पद्मावती के साथ होनेवाला विवाह और उसके बाद पृथ्वीराज का विजय अभिषेक आदि घटनाएँ कल्पित एवम् अनैतिहासिक हैं।

निष्कर्षः संक्षेप में 'पद्मावती समय' की सारी कथा कल्पित है। इसमें ऐतिहासिकता का अंश नाम मात्र को भी नहीं है। इसमें चित्रित ऐतिहासिक पात्रों के नाम भी कल्पित एवम् अनैतिहासिक हैं। इसके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि चंद ने प्रेमाख्यान काव्य रचे हुए होते तो उन्हें जायसी से भी अधिक सफलता मिली होती। वास्तव में 'पद्मावती समय' का मूल्यांकन प्रेमाख्यान काव्य के रूप में किया जाना चाहिए, न कि ऐतिहासिक दृष्टि से।

अतः कहा जा सकता है कि कवि चंद बरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य का यह बीसवाँ 'पद्मावती समय' पूर्ण रूप से अनैतिहासिक काव्य एक सुंदर, सुघड़ कल्पना मात्र ही है। इसमें इतिहास खोजना व्यर्थ है।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, सिंह, नामवर (संपा.), संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, साहित्य भवन, लिमिटेड, इलाहाबाद,1952, पृ.23
2. वही.पृ.47
3. वही.पृ.48
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिंदी साहित्य का आदिकाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ.117